प्रदीप मिश्रा जी के कथा कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

कथावाचक श्री प्रदीप मिश्रा मूलतः मध्य प्रदेश के सीहोर के भगवान शिव के मंदिर में अपनी कथा के लिए जाने जाते हैं। श्री प्रदीप मिश्रा शिव पुराण तथा भगवान शिव के व्यक्तित्व को लेकर कथा वाचन करते हैं।

हमने उनकी कई कथा और यूट्यूब पर उनके शॉर्ट्स को सुना है। वह भगवान शिव की पूजा करके जीवन में सफलता प्राप्त करने, तथा संबंधित विषयों पर बात करते हैं। राजस्थान में महिलाओं के बीच उनकी अत्यधिक लोकप्रियता है।

शिव संस्कृति का आधार हैं, शिव सृष्टि का आरंभ हैं और शिव ही सृष्टि का अन्त हैं, शिव ही जीवन हैं और जीवन से परे जो कुछ है , वो भी शिव ही हैं।

भगवान शिव के व्यक्तित्व में विज्ञान है और कृतित्व में कला। उनके व्यक्तित्व में पर्यावरण का विज्ञान अर्थात प्रकृति को बचाए रखना है। और उनके कार्यों में समन्वय की कला यानी तालमेल बनाए रखना।

उन्होंने गंगा के नीर को अपनी जटाओं में धारण कर रखा है, सांप को गले में, बाघ की खाल और प्राकृतिक भस्म को शरीर पर धारण कर रखा है।

इस तरह से भगवान शिव पर्यावरण के पोषण और संरक्षण का संदेश देते हैं। नंदी उनका वाहन है। वे सभी प्राकृतिक तत्वों में संतुलन का भी संदेश देते हैं।

शिव के गले में सर्प भी इस बात का संकेत है कि पर्यावरण की रक्षा तभी होगी जब हम हर जीव-जन्तु की रक्षा करेंगे। वे पर्वत पर रहते हैं और कंदमूल खाते हैं। उनके भक्तों में तमाम पशु-पक्षी, देव दानव शामिल हैं। उनका यह स्वरूप पर्यावरण के प्रति उनके प्रेम को दिखाता है।

महादेव शिव, प्रवाहमान गंगा नदी को अपनी जटाओं में धारण करके पर्यावरण की पवित्रता और प्रकृति की प्रसन्नता की गारंटी तो देते ही हैं, जल को ऊंचा स्थान देकर जल के सम्मान और

संरक्षण की मुहिम भी चलाते हैं। यानी - नीर भरी नदी को सिर पर सम्मान, यही है महादेव शिव का पर्यावरण-विज्ञान।

शिव के वाहन नंदी और पार्वती के वाहन सिंह का साथ-साथ रहना भी समन्वय ही दर्शाता है। शिव के गले में सांप, गणेश का वाहन चूहा और कार्तिकेय का वाहन मयूर भी शिव परिवार में मैत्रीपूर्वक रहते हैं। शिव परिवार हमें यह प्रेरणा देता है कि हम सबको मिल-जुलकर रहना चाहिए। सौहार्द के साथ रहना चाहिए।

शिवजी ऐसे देवता हैं, जिन्हें मानव से लेकर भूत-पिशाच, दानव, देवता और सभी तरह के जीव भी पूजते हैं। भगवान शिव सबके लिए सुलभ है, सभी के लिए सहज हैं।

देवाधि देव महादेव को गहन ध्यान, चिंतन और एकाग्रता के लिए जाना जाता है। भगवान शिव योग और अध्यात्म के साक्षात प्रतीक हैं। यही अध्यात्म और योग आज भारत की सॉफ्ट पावर है।

आज दुनिया के देश भौतिक जगत में तो आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन भारत भौतिक जगत के साथ अध्यात्म के चिंतन में भी आगे बढ़ रहा है। हमारा अध्यात्म, हमारी शक्ति है, संस्कृति है। भगवान शिव हमारी इस संस्कृति के सूत्रधार हैं।

हम भगवान शिव को भी जब देखते हैं तो ध्यान मुद्रा में देखते हैं। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर को भी हम ध्यान में पाते हैं।

आज यहाँ उपस्थित सभी जनों और युवाओं से मेरा विशेष आग्रह है कि आत्मिक विकास और निजी उन्नति के लिए भारत की प्राचीन परंपरा योग और ध्यान का अभ्यास करें।

हमारे देश ने दुनिया को वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा दी है। यह हमारी संस्कृति रही है कि हमने सम्पूर्ण पृथ्वी को ही अपना परिवार माना है। इस वैश्विक परिवार में आज पूरी दुनिया मान रही है कि भारत अग्रणी भूमिका में है। ऐसे में हमारे नागरिकों व हमारे नौजवानों का दायित्व बढ़ जाता है।

भगवान शिव मौन भी रहते हैं और तांडव भी करते हैं. वह पुरुषत्व का प्रतीक होते हुए भी अपने भीतर स्त्री का गुण रखते हैं, इसलिए उन्हें अर्धनारीश्वर कहा जाता है. शिव में ज्ञान और शिक्षाओं

का ऐसा भंडार है, जो लक्ष्य को पाने और कठिन परिस्थितियों से निपटने में आपके लिए मददगार साबित होगा।

भगवान शिव ने जिस तरह से अपनी शिखा पर गंगा को धारण किया है, उससे एकजुट होने की सीख मिलती है। बिखरे हुए केशों को एकत्र करके शिव ने गंगा के विकराल रूप को शांत स्वरूप में परिवर्तित कर दिया।

शिव त्रिनेत्र हैं। मस्तक पर स्थित उनका तीसरा नेत्र बताता है कि आने वाली परिस्थितियों को नियंत्रित करने के लिए सिर्फ बाहरी नेत्रों का प्रयोग न करें, बल्कि सोच-समझकर निर्णय लें। जब हम सोच समझकर, पूरा विचार करके निर्णय लेंगे, तो हमारे सभी काम सफल होंगे।

भगवान शिव, शशि शेखर हैं, उन्होंने अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण कर रखा है। चंद्रमा शीतलता और शांति का प्रतीक माना जाता है। भगवान शिव से हमें यह सीख भी मिलती है कि हम अपने मन पर नियंत्रण बनाए रखें।

भगवान शिव का एक रूप नीलकंठ भी है। समुद्र मंथन से जो अमृत निकला, उसे तो सबने प्राप्त करना चाहा, लेकिन जो विष निकला, भगवान शिव ने उस विष से इस संसार की रक्षा की। उस विष को भी उन्होंने पिया ही नहीं बल्कि अपने कंठ में ही धारण कर लिया। भगवान शिव हमें बताते हैं कि बुराई से दूर ही रहना चाहिए।

शिव महापुराण कथा का जो अमृत पान करता है, या शिव भक्ति करता है, उसे शिव लोक की प्राप्ति होती है। शिव पुराण से हमें यह सीख मिलती है कि मनुष्य को मन, वाणी और कर्मों से किसी को भी आहत नहीं करना चाहिये। शिव पुराण में सत्य बोलना और सत्य का साथ देने की सीख हमें मिलती है।

शिव पुराण मानव प्रकृति को चेतना के चरम तक ले जाने का सर्वोच्च विज्ञान है, जिसे बहुत सुंदर कहानियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। योग को एक विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया है, जिसमें कहानियां नहीं हैं, लेकिन अगर आप गहन अर्थों में उस पर ध्यान दें, तो योग और शिव पुराण को अलग नहीं किया जा सकता। एक उनके लिए है, जो कहानियां पसंद करते हैं तो दूसरा उनके लिए

है, जो हर चीज को विज्ञान की नजर से देखना चाहते हैं, मगर दोनों के लिए मूलभूत तत्व एक ही हैं।

भगवान शिव आशुतोष हैं। यानि शीघ्र प्रसन्न होते हैं। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए, उनकी पूजा करने के लिए कोई बहुत जतन नहीं करने पड़ते। केवल जल चढ़ाने से भी भगवान शिव सदा प्रसन्न रहते हैं।

भगवान शिव तो देवों के देव हैं। इसलिए उन्हें हम महादेव भी कहते हैं। भगवान शिव व्यक्ति की चेतना के स्वरूप हैं।

गले में नाग देवता और हाथों में डमरू और त्रिशूल लिए हुए भगवान शिव हमें जीवन में अभय होने यानी साहसी बनने की प्रेरणा देते हैं।

भगवान शिव सृष्टि की उत्पत्ति के भी देव हैं, और संहार के अधिपति भी शिव ही हैं। लय एवं प्रलय दोनों को अपने अधीन किए हुए भगवान शिव जीव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं। लोक कल्याण के लिए ही भगवान शिव ने समुद्र मंथन से निकला विष (हलाहल) पिया और वे नीलकंठ महादेव कहलाए।

भगवान शिव भारतीय संस्कृति के अग्रणी देव हैं। भारत की संस्कृति में जहाँ बहुत विविधता है। अलग अलग परंपरा है। सभी संस्कृति और परंपराओं को भगवान शिव से प्रेरणा मिलती है। शिव को कोई किस रूप में पूजता है, कोई किस स्वरूप में आराधना करता है। सभी की शिव के प्रति अपनी श्रद्धा है, सभी का भगवान शिव के लिए अपना विशेष भाव है।

आप सभी पर भगवान शिव का आशीर्वाद सदैव बना रहे, सबका कल्याण हो। मैं भगवान शिव से यही प्रार्थना करता हूँ।

कर्ता करें ना कर सकें, शिव करें सो होए।

आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं।

ॐ नमः शिवाय।

.....